IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

नई शिक्षा नीति में मूल्य आधारित शिक्षा का स्थान

डॉ. सुधा रिछारिया

प्राचार्य

श्रीमति विद्यावती कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, झाँसी

सारांश

भारत की नई शिक्षा नीति (2020) ने शिक्षा प्रणाली को व्यापक रूप से पुनर्गठित करने का प्रयास किया है। इस नीति में जहाँ एक ओर ज्ञान, कौशल, प्रौद्योगिकी और नवाचार पर जोर दिया गया है, वहीं दूसरी ओर मूल्य आधारित शिक्षा को शिक्षा की आत्मा माना गया है। मूल्य आधारित शिक्षा का अर्थ केवल नैतिक शिक्षा या चारित्रिक विकास से नहीं है, बल्कि इसमें सामाजिक न्याय, सांस्कृतिक संवेदनशीलता, पर्यावरणीय जिम्मेदारी, लोकतांत्रिक दृष्टिकोण और मानवता की व्यापक अवधारणा शामिल है। इस शोध-पत्र में मूल्य आधारित शिक्षा की संकल्पना, भारतीय परिप्रेक्ष्य में उसका महत्व, नई शिक्षा नीति 2020 में उसका स्थान, उससे जुड़ी चुनौतियाँ तथा संभावनाओं का विश्लेषण किया गया है।

प्रस्तावना

शिक्षा केवल ज्ञानार्जन की प्रक्रिया नहीं है, बल्कि यह व्यक्ति को संपूर्ण व्यक्तित्व प्रदान करती है। प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य केवल जानकारी देना नहीं था, बल्कि चरित्र निर्माण और समाजोपयोगी जीवन के लिए प्रेरित करना था। आज की बदलती दुनिया में शिक्षा के व्यावसायिक पक्ष पर अत्यधिक बल दिया गया है, जिससे नैतिक मूल्यों का ह्रास हुआ है। ऐसे समय में मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता और भी बढ़ जाती है। नई शिक्षा नीति 2020 इस आवश्यकता को

भलीभाँति पहचानती है और शिक्षा के हर स्तर पर मूल्यों को समाहित करने की कोशिश करती है।

शोध की पृष्ठभूमि

भारतीय शिक्षा परंपरा में गुरुकुल प्रणाली से लेकर तक्षशिला और नालंदा विश्वविद्यालय तक, मूल्य आधारित शिक्षा की सुदृढ़ परंपरा रही है। आचार्य चाणक्य, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर और डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन ने शिक्षा में मूल्यों की अनिवार्यता पर बल दिया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भी विभिन्न शिक्षा आयोगों (कोठारी आयोग 1964-66, राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1968, 1986, 1992) ने मूल्य आधारित शिक्षा की आवश्यकता को स्पष्ट किया। किंतु तेजी से बढ़ते बाजारीकरण और प्रतिस्पर्धा के युग में मूल्य शिक्षा का स्थान धीरे-धीरे कम होता गया।

नई शिक्षा नीति 2020 इस प्रवृत्ति को पलटने और शिक्षा को पुनः मानवीय मूल्यों की ओर उन्मुख करने का एक महत्वपूर्ण प्रयास है।

मूल्य आधारित शिक्षा की संकल्पना

मूल्य आधारित शिक्षा (Value Based Education) वह शिक्षा है, जो व्यक्ति के जीवन में सत्य, अहिंसा, करुणा, सहिष्णुता, ईमानदारी, समानता, पर्यावरण-प्रेम, सहयोग, अनुशासन और जिम्मेदारी जैसे मूल्यों को स्थापित करे। इसका उद्देश्य केवल अच्छे पेशेवर तैयार करना नहीं, बल्कि अच्छे नागरिक और अच्छे मनुष्य तैयार करना है।

मूल्य आधारित शिक्षा के प्रमुख आयामः

नैतिक मूल्य – सत्य, अहिंसा, ईमानदारी, न्याय।

सामाजिक मूल्य – समानता, सहिष्णुता, भाईचारा, सामाजिक न्याय।

सांस्कृतिक मूल्य – भारतीय परंपराओं, विविधताओं और धरोहर का सम्मान।

पर्यावरणीय मूल्य – प्रकृति संरक्षण, सतत विकास।

लोकतांत्रिक मूल्य – संविधान, अधिकारों और कर्तव्यों के प्रति निष्ठा।

वैश्विक मूल्य – मानवता, शांति और विश्वबंधुत्व।

नई शिक्षा नीति 2020 का संक्षिप्त अवलोकन

नई शिक्षा नीति 2020 ने शिक्षा व्यवस्था में कई बड़े सुधार सुझाए हैं। इनमें प्रमुख बिंदु हैं:

5+3+3+4 संरचना (पूर्व-प्राथमिक से लेकर 12वीं तक)।

मातृभाषा में शिक्षा पर बल।

कौशल आधारित शिक्षा।

बहुविषयक शिक्षा (Multidisciplinary Approach)।

तकनीकी व डिजिटल शिक्षा का एकीकरण।

शिक्षक प्रशिक्षण और सतत मूल्यांकन प्रणाली।

अनुसंधान व नवाचार पर बल।

मूल्य आधारित और राष्ट्रीय सांस्कृतिक चेतना पर विशेष ध्यान।

नई शिक्षा नीति और मूल्य आधारित शिक्षा का अंतर्संबंध

विद्यालय स्तर पर – -

पाठ्यचर्या में कला, संगीत, खेल, योग, ध्यान और नैतिक शिक्षा को अनिवार्य किया गया।

जीवन कौशल (Life Skills) जैसे सहानुभूति, सहयोग, आत्म-नियंत्रण, समस्या-समाधान आदि पर बल।

स्थानीय संस्कृति, परंपराओं और भाषाओं के सम्मान की शिक्षा।

उच्च शिक्षा स्तर पर

बहुविषयक शिक्षा से छात्रों को केवल तकनीकी विशेषज्ञ न बनाकर समग्र नागरिक बनाने की कोशिश।मानविकी और सामाजिक विज्ञानों का तकनीकी व व्यावसायिक पाठ्यक्रमों में समावेश।

संविधान, लोकतंत्र, न्याय और सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) से जुड़े मूल्यों को प्रोत्साहन।

शिक्षक प्रशिक्षण

शिक्षक को केवल ज्ञान का वाहक न मानकर एक मूल्य मार्गदर्शक के रूप में प्रस्तुत किया गया।

शिक्षकों में करुणा, सहानुभूति और छात्र-केंद्रित दृष्टिकोण का विकास।

सामाजिक एवं सांस्कृतिक दृष्टिकोण –

"एक भारत श्रेष्ठ भारत" की अवधारणा को शिक्षा से जोड़ना।

विद्यार्थियों को भारतीय परंपरा, संस्कृति और वैश्विक मानवता से परिचित कराना।

चुनौतियाँ

व्यावसायीकरण और बाजारीकरण - शिक्षा को रोजगार से जोड़ने की दौड़ में मूल्य शिक्षा पीछे छूट सकती है।

अभिभावकों व छात्रों का दृष्टिकोण – समाज में शिक्षा को केवल नौकरी का साधन माना जाता है।

शिक्षकों की तैयारी – मूल्य शिक्षा देने के लिए शिक्षक स्वयं मूल्यों से परिपूर्ण हों, यह एक बड़ी चुनौती है।

सांस्कृतिक विविधता – भारत की बहुलतावादी संस्कृति में मूल्यों की परिभाषा भिन्न हो सकती है।

पाठ्यक्रम का बोझ – यदि मूल्य शिक्षा को केवल अतिरिक्त विषय मान लिया गया, तो छात्र इसे महत्वहीन समझ सकते हैं।

संभावनाएँ व समाधान

समग्र शिक्षा का दृष्टिकोण – शिक्षा को केवल परीक्षा-केन्द्रित न रखकर जीवन-केन्द्रित बनाया जाए।

पाठ्यचर्या का पुनर्गठन – हर विषय में मूल्य आधारित दृष्टांत और गतिविधियाँ शामिल की जाएँ।

अनुभवात्मक शिक्षा – सामुदायिक सेवा, पर्यावरण संरक्षण कार्यक्रम, सामाजिक कार्य आदि को अनिवार्य बनाया जाए।

शिक्षक विकास कार्यक्रम – शिक्षकों के लिए विशेष प्रशिक्षण जिसमें मूल्य आधारित शिक्षण की पद्धतियाँ हों।

परिवार और समाज की भूमिका – केवल विद्यालय नहीं, बल्कि परिवार और समाज भी मूल्य शिक्षा का हिस्सा बनें।

डिजिटल मीडिया का उपयोग – फिल्मों, कहानियों, डिजिटल कंटेंट और खेलों के माध्यम से मूल्य शिक्षा को रोचक बनाना।

राष्ट्रीय व वैश्विक दृष्टिकोण - छात्रों को न केवल भारतीय संस्कृति, बल्कि वैश्विक चुनौतियों और मानवीय मूल्यों से भी जोड़ा जाए।

निष्कर्ष

नई शिक्षा नीति 2020 ने भारतीय शिक्षा प्रणाली में मूल्य आधारित शिक्षा को केंद्रीय स्थान देने का प्रयास किया है। यह नीति केवल रोजगारोन्मुख शिक्षा पर बल नहीं देती, बल्कि नागरिकों के समग्र विकास को प्राथमिकता देती है। यदि मूल्य आधारित शिक्षा को सही ढंग से लागू किया जाए, तो यह न केवल भारत को अच्छे पेशेवर देगा, बल्कि संवेदनशील, जिम्मेदार और नैतिक नागरिक भी प्रदान करेगा।

चुनौती यह है कि मूल्य शिक्षा को केवल औपचारिक या सैद्धांतिक रूप में न रखा जाए, बल्कि इसे व्यवहारिक और अनुभवजन्य बनाया जाए। इस दिशा में शिक्षक, अभिभावक, नीति निर्माता और पूरा समाज मिलकर कार्य करें, तभी शिक्षा का वास्तविक उद्देश्य - "विद्या का उपयोग मानवता के कल्याण में" पूरा हो सकेगा।

संदर्भ

1. राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय।
2. कोठारी आयोग (1964-66) की रिपोर्ट।
3. गांधी, महात्मा. हिन्द स्वराज।
4. विवेकानंद, स्वामी. शिक्षा पर विचार।
5. राधाकृष्णन, डॉ. सर्वपल्ली. भारतीय संस्कृति और शिक्षा।
6. शर्मा, आर.एन. (2019). भारतीय शिक्षा का इतिहास और दर्शन।
7. यूनेस्को (2015). Education 2030 Framework for Action.